

संगोष्ठी प्रतिवेदन

राष्ट्रीय संगोष्ठी

मार्च 14-15, 2016

‘बुंदेलखण्ड की कला, संस्कृति एवं पुरातत्त्व’

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग

(डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म०प्र०)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

एवं

डॉ० विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरातत्त्व शोध संस्थान

(संचालनालय पुरातत्त्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय, भोपाल, म०प्र०)

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग तथा डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर पुरातत्त्व शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के बीज वक्ता प्रो. विवेक दत्त झा ने कहा कि “बुंदेलखण्ड कला, संस्कृति और पुरातत्त्व का नाभि स्थल है जो अपनी तरह से सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप की कृति, प्रकृति और संस्कृति को व्याख्यायित करता है।” उन्होंने बुंदेलखण्ड अंचल के विभिन्न पुरातात्विक स्रोतों का उद्धरण देते हुए यहाँ की कला और संस्कृति के बारे में विस्तारपूर्वक परिचय दिया।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के सदस्य प्रो. रहमान अली ने बताया कि “इस अंचल की पुरातात्विक सर्वेक्षण में 6 लाख वर्ष तक की सामग्री प्राप्त हुई है जो बहुत ही अद्भुत है। एरण का इसमें प्रमुख स्थान है, यहाँ की खुदाई समूचे प्राचीन इतिहास का टर्निंग पॉइंट है और प्राचीन इतिहास को एक नई दिशा देने में इस स्थल का महत्वपूर्ण योगदान है।”

मानविकी और सामाजिक विज्ञान अध्ययन शाला के अधिष्ठाता प्रो. दिवाकर शर्मा ने बुंदेलखण्ड की सामाजिक संस्कृति का ऐतिहासिक परिचय दिया। उन्होंने बुंदेलखंड की परम्पराओं, रीति-रिवाजों, लोककलाओं, नृत्य, संगीत, साहित्य आदि के बारे में बताते हुए कहा कि इनकी ख्याति अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है। आज भी कला एवं संस्कृति के अनेक क्षेत्रों में इस अंचल के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर मौजूद हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. आर. पी. तिवारी ने कहा कि बुंदेलखण्ड का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। इस क्षेत्र ने देश के विकास में अपना योगदान दिया है लेकिन आज देश का हृदय कहा जाने वाला यह क्षेत्र आर्थिक रूप से बहुत ही पिछड़ा है। यदि हृदय ही कमजोर होगा तो पूरा शरीर भी बेहतर ढंग से काम नहीं कर सकेगा। उन्होंने कहा कि बुंदेलखण्ड के आर्थिक विकास के लिए इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान जैसे अंतर्राष्ट्रीय शासनों को एक मंच पर आकर साथ-साथ काम करने की आवश्यकता है।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई और स्वागत वक्तव्य एवं संगोष्ठी का विवरण विभागाध्यक्ष डॉ. नागेश दुबे ने प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. सुरेन्द्र यादव ने और आभार डॉ. आर. पी. सिंह ने माना।

संगोष्ठी के प्रथम अकादमिक सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत किये गए जिसमें डॉ. बहादुर सिंह परमार ने बुंदेलखण्ड की लोक परम्पराएँ, डॉ. जरीना जान चौधरी ने कारस देव की बुन्देली लोकगाथा, डॉ. सुजाता मिश्र ने बुंदेलखण्ड संस्कृति भाषा और लोक साहित्य, पंडित हर गोविन्द तिवारी ने बुंदेलखण्ड की मूर्तिकला के कुछ प्राचीन उदाहरण, डॉ. मशकूर अहमद ने नरयावली में नव पाषाण कालीन चित्र स्थलों की खोज, नन्द किशोर पटेल ने बुन्देली लोक नाट्य परंपरा पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता कैलाश मढ़बैया ने किया और संचालन डॉ. मोहन लाल चढार ने किया।

संगोष्ठी के द्वितीय अकादमिक सत्र में— दृश्य—श्रव्य माध्यम से माधव चन्द्र द्वारा बुंदेलखण्ड के अनछुए पहलुओं को रेखांकित किया। मनीष झा ने सागर एक धरोहर, डॉ. मोहन चढार द्वारा सागर जिले से प्राप्त शैव एवं वैष्णव प्रतिमाएं, सुशील कुमार गर्ग द्वारा बुन्देली लोक संस्कृति के संरक्षण के आधार, हरित कुमार मीणा द्वारा बुन्देलखण्ड की सिंचाई व्यवस्था तथा सुरेन्द्र कुमार चौरसिया द्वारा दमोह जिले के कतिपय पुरातात्विक पर्यटन स्थलों से सम्बन्धित विषयों पर शोध पत्र वाचन किया। सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर एन विश्वकर्मा ने की। संचालन विशाल विक्रम सिंह ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन चले दो सत्रों में डॉ. कैलाश मढ़बैया, डॉ. जितेन्द्र जैन, डॉ. शिशिर जैन, डॉ. राज बहादुर क्षत्री, डॉ. अनुपमा कौशिक, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. आफरीन, प्रो. बी. के. श्रीवास्तव, डॉ. रामहैत गौतम, डॉ. संजय बरोलिया, डॉ. राजेन्द्र यादव, दामोदर अग्निहोत्री, अशोक सिंह राजपूत ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में बोलते हुए रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्रा ने कहा कि पुरातन संस्कृति के प्रति युवा पीढ़ी में अरुचि बढ़ती जा रही है। उनमें रुचि पैदा करने की आवश्यकता है। यह संप्रेषण इतिहास से हो सकता है। उन्होंने श्रीमद्भगवत गीता के अनेक उदाहरणों के माध्यम से इतिहास के ज्ञान को आवश्यक बताया। जैसा श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान कराया था, वैसे ही इतिहास का ज्ञान सत्य की स्थापना करता है। न्याय—अन्याय, धर्म—अधर्म, सत्य—असत्य के बीच भेद पैदा करना, उनका बोध हमें इतिहास ही कराता है। इसी बोध से ही राष्ट्र की चुनौतियों से निपटा जा सकता है। भारत के पुनर्निर्माण में इतिहास के स्वर्णिम पन्नों को जोड़ना आवश्यक है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारी महात्मा गाँधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट के संस्कृत विभाग की प्रोफेसर प्रज्ञा मिश्रा ने संस्कृत कविताओं के माध्यम से लोक जीवन के पक्ष को रेखांकित किया।

अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. आर. पी. तिवारी ने दो दिनों तक चले अकादमिक मंथन की सराहना करते हुए कहा कि इस संगोष्ठी में प्राप्त निष्कर्षों को और आगे बढ़ाया जाये, ताकि संस्कृति एवं कला के नये आयाम विकसित हो सकें। उन्होंने मध्यप्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के बीच अकादमिक साझेदारी कार्यक्रमों को विकसित करने की बात कही।

कुलानुशासक प्रो. ए. पी. दुबे ने कहा कि संस्कृति एक व्यापक अवधारणा हैं, जो अपने आप में बहुत कुछ समेटे हुए हैं। संगोष्ठी में पधारे अतिथियों ने जो विशिष्ट अनुभव प्राप्त किया है, वही बुन्देलखण्ड की संस्कृति है।

अतिथियों का परिचय एवं स्वागत भाषण विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने किया। संगोष्ठी संयोजक डॉ. आर. पी. सिंह ने संगोष्ठी की समग्र रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्रो. आर. एस. विश्वकर्मा और डॉ. जरीना जॉन चौधरी ने दो दिनों तक चले अकादमिक मंथन एवं अनुभवों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. सुरेन्द्र यादव और आभार विभागाध्यक्ष डॉ. नागेश दुबे ने माना। इस अवसर पर शिक्षक, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

(डॉ. नागेश दुबे)